गीतिकाव्य Contd.

(3) गाथा-सप्तशती - 'गाथा' प्राकृत भाषा का लोकप्रिय छन्द है, जो संस्कृत के आर्या छन्द के समान है। सामान्य जन-वर्ग के विविध अनुभवों और भावों की अभिव्यक्ति इनमें पायी जाती है। इन प्रसंगों में नारी स्वर ही अधिक मुखर हुआ है। इस संग्रह के कर्त्ता का नाम हाल है। इनका समय सौ ई० के आस-पास माना जाता है।

यथार्थ रूप से ग्राम्य-जीवन का चित्रण इसकी मुख्य विषय-वस्तु है। विभिन्न कवियों की रचनाओं का संकलन होने से इसके कथ्य-विषय में पर्याप्त विविधता और व्यापकता है। प्रेम के विविध चित्रों को गाथा-सप्तशती में अंकित किया गया है। साथ ही गृहस्थ-जीवन का आनन्द भी दिखाया गया है। कहीं-कहीं सूक्तियाँ भी संकलित हैं — 'धण्णा बहिरा अन्धा ते च्चिअ जीअन्ति माणुसे लोए। ण सुणन्ति पिसुणवअणं खलाण ऋद्धिं ण पेक्खन्ति ॥(7।95) अर्थात ... अन्धे और बहरे ही मनुष्य लोक में भाग्यशाली हैं जो यहाँ वास्तव में जीते हैं, न वे पिशुन व्यक्तियों की बात सुन पाते हैं और न दुष्टों की समृद्धि देख पाते हैं।

(5) भर्तृहरि के शतक त्रय - शृंगार, वैराग्य और नीतिशतक में एक-एक सौ पद्य हैं। शतकों में संकलित पद्य अनेक ग्रंथों में मिलते हैं, फिर भी उनमें एकरूपता और भाषा की सरलता ऐसी है कि इनकी प्राचीनता में कोई संदेह नहीं है।

भर्तृहरि का नीतिशतक व्यावहारिक जीवन की सम-विषम परिस्थितियों का सुन्दर चित्रण करता है। इसमें मूर्ख-निन्दा, सज्जनों की प्रशंसा, परोपकार, धैर्य, भाग्य तथा कर्म की महिमा से सम्बद्ध अनेक पद्य हैं। मूर्ख-प्रकरण सामान्य जीवन को दिशा देने वाला है, 'सभी असंभव कार्य संभव हो सकते है किन्तु 'न तु मूर्खजन चित्तमाराधयेत्।'

शृंगार शतक में स्त्री-पुरुष पर प्रभावशाली

शृंगार एवं स्त्रियों के हाव-भाव का विस्तृत वर्णन किया गया है। इसके कुछ पद्यों में ऋतुओं का भी वर्णन है। इस शतक के अनेक पद्यों में वेश्याओं की निन्दा करते हुए ऐसे व्यक्तियों की प्रशंसा की गयी है जो स्त्रियों के रूप-जाल में नहीं फँसते। इस प्रकार शृंगार की मनोरमता में कवि ने नैतिक आदर्श की पवित्र धारा प्रवाहित की है।

वैराग्यशतक में भर्तृहरि तृष्णा, रूपादि विषय, याचना गर्व आदि की निन्दा करते हुए वृद्धावस्था, संतोष और शान्ति, काल की महिमा, इन्द्रिय-दमन, विरक्तता, संसार की अनित्यता, योगी आदि विषयों का वर्णन करते हैं। इस संसार में मोह का कैसा प्रभाव है कि लोग अपनी व्यस्तता के कारण काल का क्रमशः समाप्त होना नहीं देख पाते हैं। सामने उपस्थित जन्म-मृत्यु, वृद्धावस्था के संकटों को नहीं देख पाते हैं और न भयभीत होते हैं।

भर्तृहरि के इन शतकों में प्राञ्जल, ललित और प्रवाहपूर्ण काव्यशैली मिलती है। अपने अनुभवों को कवि ने कलात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। इनके अनेक पद्य और वाक्यांश लोकोक्तियों के रूप में प्रचलित हैं। कोई व्यक्ति इन शतकों में सम्पूर्ण जीवन-दर्शन की झलक ले सकता है।

भर्तृहरि के कुछ सुभाषित वाक्य — (नीति शतक से) —
① 'विद्याविहीनः पशुः' ② 'वाग्भूषणं भूषणम्' ③ सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ④ मूर्खस्य नास्त्यौषधम्। ⑤ मनस्वी कार्यार्थी गणयति न दुःखं न च सुखम्।

शृंगारशतक — 'प्रियः को नाम योषिताम्।'
वैराग्य शतक — 'संदीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः।'

(Contd.) Uma Prakash
B.A. Sk. Dept. of Skt